आत्मा रूपी पोटली में धर्म संचय का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

–चंडीखोल स्थित डीयू पब्लिक स्कूल से आचार्यश्री ने दिया पावन संबोध

08.01.2018 चंडीखोल, जाजपुर (ओड़िशा): ओड़िशा राज्य में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की अलख जगाते और जन–जन के मानस में मानवता के भावों को जागृत करने के लिए पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ गांव–गांव, नगर–नगर, शहर–शहर होते हुए धीरे–धीरे ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर की ओर बढ़ रहे हैं। जनता चाहे ग्रामीण हो अथवा शहरी सभी के जीवन में एक आध्यात्मिक चेतना जागृत करते हुए आचार्यश्री निरंतर प्रवर्धमान हैं।

सोमवार को आचार्यश्री प्रातः की मंगल बेला में बाराबाती से पावन प्रस्थान किया। उत्तर से दक्षीण की ओर बने राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 16 पर विहार आरम्भ किया। आचार्यश्री की यात्रा जैसे–जैसे बढ़ रही थी, सूर्य का आतप भी बढ़ता जा रहा था। ओड़िशा में सूर्य की प्रखरता मानों अभी से गर्मी का अहसास कराने में सक्षम है। इन भौगोलिक परिवर्तनों से अप्रभावी आचार्यश्री मानवता के कल्याण को गतिमान थे। लगभग 13 किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री धवल सेना संग जाजपुर जिले के चंडीखोल स्थित डीयू पब्लिक स्कूल में पधारे।

यहां उपस्थित श्रद्धालुओं व स्कूल के शिक्षक–शिक्षिकाओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि मनुष्य का जीवन अनित्य है। जिस प्रकार कुश के अग्र भाग पर अटकी ओस की बूंद का कोई भरोसा नहीं होता है कि वह तक उसपर टिकी रहेगी और कब टपक जाएगी, उसी प्रकार आदमी के जीवन का कोई भरोसा नहीं होता कि कब मानव जीवन का अंत हो जाएगा। आदमी के जीवन में मृत्यु के आने के लिए अनेक द्वार है। जब आदमी जन्म लेता है, उसके साथ ही मृत्यु उसकी ओर बढ़ने लगती है और जैसे ही जीवन और मृत्यु के बीच का फासला समाप्त हो जाता है, इस जीवन का अंत हो जाता है। यह जीवन इतना अनित्य है कि एक श्वास का भी भरोसा नहीं कि दूसरी श्वास आए अथवा न आने पाए।

आदमी को इस अनित्यता की ओर ध्यान देना चाहिए और इससे यह प्रेरणा लेने का प्रयास करना चाहिए कि उसने अपने जीवनकाल में धर्म का अर्जन किया या नहीं। जिस प्रकार मानव जीवन अनित्य है उसी प्रकार पद, प्रतिष्ठा, धन भी अनित्य होता है। इसलिए आदमी को अपने जीवन में धर्म का अर्जन करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी अपने जीवन में पाप कर्मों से बचने का प्रयास करे और धर्म का संचय करने का प्रयास तो मानव जीवन सार्थक हो सकता है। आदमी को अपने जीवन में केवल अर्थ का अर्जन ही नहीं धर्म का अर्जन करने का प्रयास करना चाहिए। इस आत्मा रूपी पोटली में धर्म का संचय करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने अपने श्रीमुख से कुछ श्रद्धालुओं को सम्यक्तव दीक्षा (गुरुधारणा) प्रदान की। इसके उपरान्त आचार्यश्री ने विद्यालय के उपस्थित शिक्षक–शिक्षिकाओं को अहिंसा यात्रा की अवगति प्रदान कर अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी को स्वीकार करे का आह्वान किया तो उपस्थित शिक्षक–शिक्षिकाओं ने संकल्पत्रयी स्वीकार की। अपने विद्यालय में महातपस्वी आचार्यश्री के आगमन से प्रफुल्लित इस विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती रश्मिता मिश्रा ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।